

सांप

सांप के काटने पर पीड़ित व्यक्ति को शांत रखें, काटे हुए स्थान को पकड़कर रखें और व्यक्ति को तुरंत ऐसे अस्पताल ले जाएं जहां विषरोधक उपचार उपलब्ध है

पर्यावास

खुले, घासदार और झाड़ी वाले इलाके, खेत, पेड़ों में बने छेद, जंगल और शहर जैसे इंसानी पर्यावास

प्रजाति प्रचुरता

भारत में सांपों की लगभग 300 प्रजातियां पाई जाती हैं। भारत में सांपों को कानूनी रूप से संरक्षित किया जाता है

विशाल 4

अधिकतम सांप कोई हानि नहीं पहुंचाते हैं। अधिकतम मौतों के लिए केवल चार प्रजातियां ही जिम्मेदार हैं

कॉमन कोबरा / स्पेक्टैकल्ड कोबरा

नाजा नाजा
तंत्रिआविषि जहर



बड़े आकार का सांप जो गहरे भूरे से लेकर काले रंग का होता है। चौकन्ना होने पर, यह सांप अपना सर उठाता है और बचाव के लिए अपने फन को फूला देता है। इसके शरीर पर बने शल्क मुलायम और अंडाकार होते हैं। फण पर अलग-अलग निशान होते हैं जो कि बिना कोई आकार या फिर, स्पष्ट चश्मे के आकार का हो सकता है

- संध्याकाल में यह सक्रिय हो जाता है
- आम तौर पर यह खेतों में पाया जाता है; शिकार और शरण के लिए यह घर में घुस सकता है
- कोबरा अपना बचाव करने और चेतावनी देने के लिए 'हिस्स' की आवाज निकालकर अपने फन को उठाता है
- इसके काटने पर तेज दर्द होता है और जगह में सूजन आ जाती है, साथ में, लगातार खून भी बहता है। पीड़ित व्यक्ति उल्टी कर सकता है, उसे सांस लेने में परेशानी हो सकती है और उसे धुंधला दिखाई दे सकता है
- इसके जहर से पीड़ित व्यक्ति का शरीर लकवाग्रस्त हो सकता है; उसे सांस लेने में परेशानी हो सकती है और दिल का दौरा भी पड़ सकता है

ज्यादातर सांप के दंश की घटनाएं बारिश के मौसम में होती हैं क्योंकि बारिश का पानी उनके बिलों में घुस जाने के कारण वे घरों और खेतों में चले जाते हैं

कॉमन क्रेट

बंगारस कैरुलेस
तंत्रिआविषि जहर



मध्यम आकार का सांप जिसका शरीर काले या नीले-काले रंग का होता है जिस पर दूधिया-सफेद रंग की पट्टियां (अक्सर दो) बनी होती हैं। कभी-कभी ये पट्टियां शरीर के आगे के हिस्से में नहीं होती हैं। इसके शल्क मुलायम होते हैं और हड्डीवाले क्षेत्र में षट्कोणीय आकार के होते हैं

- रात के समय सक्रिय रहता है
- इसे पत्थर वाले इलाकों, दरारों, सीमेंट की बनी सिल्लियों, पत्तों के कचरों, दीमक के टीलों, चूहों के बिल में रहना पसंद है और अक्सर घरों के अंदर बनी दरारों में भी छिप जाते हैं
- इसे अगर दिन के समय परेशान किया जाए तो यह कुंडली बनाकर अपना सिर अपने शरीर के अंदर छिपा लेता है और बहुत ज्यादा परेशान करने पर ही काटता है, लेकिन यह रात के समय आक्रामक होता है और बिना चेतावनी दिए काट भी सकता है
- अक्सर जमीन पर सोए हुए लोगों को काटता है। इसके काटने से दर्द नहीं होता है और पीड़ित व्यक्ति की जान नींद में ही चली जाती है क्योंकि इसका जहर तंत्रिआविषि होता है
- इसके काटने से निचले पेट में ऐंठन, धुंधला दिखना, पसीना आना, उल्टी और बोलने में परेशानी जैसे लक्षण दिखते हैं

क्या आप जानते हैं?

- सांप बीमारी और फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले चूहों को खाकर उनकी आबादी नियंत्रित करके पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन बनाकर रखते हैं
- सांप इंसानों से दूर रहते हैं और केवल डर जाने या आकस्मिक किसी के पैर के नीचे आने पर ही आक्रमण करते हैं
- अक्सर विषैले सांप काटते समय अपना जहर इंसान के शरीर में नहीं छोड़ते हैं जिन्हें 'झाई बाइट्स' कहा जाता है
- आम धारणा के विरुद्ध सांप इंसानों का पीछा करके उन्हें काटते नहीं हैं; सांपों की स्मरण-शक्ति कमजोर होती है और वे इंसानों से दूर ही रहते हैं
- हर साल भारत में लगभग 50,000 लोगों की मृत्यु सांप के दंश से होती है

रसेल्स वाइपर

दंबोइया रसेली
रक्तविषैली जहर

जमीन पर रहने वाला भारी सांप जिसका पूरा शरीर खुरदरे शल्कों से ढका हुआ होता है। इसका सिर त्रिभुजाकार और समतल होता है और यह गर्दन से अलग दिखता है। इसकी पीठ पर गहरे पीले, पीले भूरे या जमीनी भूरे रंग का पैटर्न होता है जिसके साथ गहरे भूरे रंग के निशान होते हैं जो पूरे शरीर में ऊपर से नीचे तक फैले होते हैं। इस हर एक निशान के चारों ओर काला चक्र होता है। इसकी बाहरी सीमा पर सफेद या पीले रंग के हाशिए से ये निशान उभर कर आते हैं

सांप के शावकों में विष ग्रंथियां पूरी तरह से क्रियाशील होती हैं; जन्म के तुरंत बाद ही ये काटने में सक्षम होते हैं



- रात में सक्रिय। ठंडे मौसम में सुबह के समय भी सक्रिय रहते हैं
- ज्यादातर, खुले, घासदार इलाकों में पाए जाते हैं लेकिन जंगलों, वनाच्छादित बागानों और खेतों में भी होते हैं
- दूर से इनकी रफ्तार धीमी लगती है और चेतावनी देने के लिए ये प्रेशर कुकर की सीटी की तरह 'हिस्स' की आवाज निकालते हैं
- अपने दांतों को खोलकर ये आक्रामक और तेज गति से काटते हैं
- इनके काटने पर दर्द होता है, जगह से खून निकलता है और अंग पर छाले पड़ जाते हैं। इसके रक्तवह तंत्र को प्रभावित करने वाले जहर के कारण मसूड़ों और आँखों से खून निकलता है

साँ-स्केल्ड वाइपर / इंडियन साँ-स्केल्ड वाइपर

एचिस कारीनाटुस
रक्तविषैली जहर

जमीन पर रहने वाला छोटे आकार और त्रिकोणीय सिर वाला सांप जिसका पूरा शरीर खुरदरे शल्कों से ढका हुआ होता है। यह ईट के लाल रंग से लेकर धूल के भूरे रंग में पाया जाता है। इसके सिर पर क्रॉस जैसा निशान बना होता है

- रात के समय सक्रिय, संध्याकाल में शिकार करता है
- रेगिस्तान, अर्ध-मरुस्थलीय इलाकों, पतझड़ वन, घास और झाड़ी वाले मैदानों में रहता है। दिन के समय पत्थरों, लकड़ी के लट्ठों के नीचे छिपा रहता है
- साइडवाइडिंग लोकोमोशन पद्धति द्वारा रेंगता है, रेंगते समय इसका शरीर अंग्रेजी अक्षर 'एस' (S) जैसा हो जाता है
- चौकन्ना होने पर अपने शरीर के शल्कों को लगातार रगड़कर कर्कश आवाज निकालता है
- डरने पर, आक्रामक होकर बिना किसी चेतावनी के बार-बार काटता है
- सांप के दंश वाली जगह में सूजन, दर्द होता है, खून निकलता है और छाले पड़ जाते हैं। इससे मसूड़ों और आँखों से भी खून निकलता है



विषैले सांप के काटने पर, समय पर चिकित्सीय परामर्श के अंतर्गत सर्पविषरोधी दवाई ही एकमात्र उपचार है

- सांप अपने शिकार को गतिहीन करने और उसे सफलतापूर्वक पचाने के लिए उसके शरीर में जहर छोड़ते हैं। सांपों की विशाल चार प्रजातियां छोटे स्तनधारी, चिड़ियों, रेंगने वाले जानवरों और उभयचरों को खाते हैं
- सांप अपने द्विशाखित जीभ का इस्तेमाल शिकार का पता लगाने और अपने आसपास के वातावरण को समझने के लिए करते ही हैं लेकिन खास तौर पर वे इसकी मदद से अपने शिकार का पीछा करते हैं
- जानकारी, जागरूकता की कमी और डर के कारण सांपों को अंधाधुंध मारा जाता है, यहां तक कि गैर-विषैले सांप भी मार दिए जाते हैं
- जंगलों का कम होना, वाहनों के नीचे आकर जान खो देना, चमड़ी और मांस के लिए सांपों का शिकार करना दूसरे ऐसे कारण हैं जिनसे सांप की आबादी को खतरा है
- डर के कारण सांपों को अंधाधुंध मार डालना भी एक मुख्य खतरा है

भारत में मनुष्य-वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत-जर्मनी सहयोग
2017 - 2023

भारत में मनुष्य-वन्य जीव संघर्ष शमन
के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन

